॥ॐ श्रीसद्गुरवे नमः॥

स्वर्गीया माता सुमित्राा देवी जी की चौथी पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में आयोजित

सत्संग के अवसर पर परम वैज्ञानिक संत सद्गुरु महर्षि मेँहीँ परमहंसजी महाराज सह उनके मानस सुत गुरुसेवी स्वामी भगीरथ दासजी महाराज के चरण-कमलों में सादर समर्पित

अभिनंदन-पुष्प

रामचरितमानस में आया है–

विधि हरिहर कवि कोबिद बानी। कहत साधु महिमा सकुचानी ॥
ब्रह्मा, विष्णु, महेश, कवि, पंडित और सरस्वती भी साधु की महिमा कहने में लजाते हैं,
तो मुझ-जैसा अधम, अज्ञ, अकिंचन, अनाड़ी, अभिमानी उसकी महिमा का गान कैसे कर सकता है?

हे धर्मधुरन्धर के सुत सुन्दर!

२०वीं सदी के सद्ज्ञान मार्त्तण्ड सर्वगुण-सम्पन्न संत सद्गुरु महाराज के आप अद्वितीय सेवक हैं। आपकी गुरु-सेवा जन्मों की है, इसलिए तो गुरुदेव आपको 'बेटा' शब्द से अभिहित करते थे। प्रायः प्रत्येक कार्य-कलाप में आपका नाम गुरुदेव द्वारा उच्चरित होता था। ऐसा माना जा सकता है कि आप सद्गुरु महाराज जी के गीत बन गये हों।

हे गुरु को प्रसन्न करनेवाले!

आपने गुरुदेव के इस वाक्य–'तन-मन-धन सब अर्पण करि करि, करो करो गुरुसेव जी।' का अक्षरशः पालन कर गुरुदेव को संतुष्ट किया है, तब तो गुरुदेव आपको बहुतेर आशिष से आभूषित किये हैं; यथा–'तुम्हारी भक्ति इसी जन्म में पूरी होगी।' 'जाओ, सब कुछ दे दिया।' 'तुम्हारी आयु लम्बी हो।' 'तुमको लोग विदेश ले जायेंगे।' "हे परमेश्वर! हे ईश्वर! पाँच बार कहकर बोले, 'हममें जितने गुण हैं, सब भगीरथ को हो'; हे परमेश्वर! हे ईश्वर! तीन बार कहकर बोले, 'हममें जो अवगुण है, सो भगीरथ को न हो।' अवगुण यही कि मैं जो लेटा रहता हूँ, सो भगीरथ को नहीं हो।"

हे गुरु-आज्ञा-रत गुरुसेवी भगीरथ!

आप गुरु-आज्ञा-पालन में सदैव तत्पर रहते थे। गुरुदेव की मौजभरी आज्ञा का पालन बिना किसी उत्तर-प्रत्युत्तर के करते थे।
जैसे–यदि एक बजे रात में आज्ञा होती स्नान कराने की, तो अनुकूल वातावरण तैयार कर स्नान कराते। एक बार प्रचण्ड गर्मी में कम्बल ओढ़ाने की आज्ञा हुई,
तो आपने ओढ़ा दिया। थोड़ी देर बाद हटा देने की आज्ञा हुई, तो हटा दिया। एक बार किसी सत्संगी के तरबूज लाने पर उसे काटने की आज्ञा हुई, तो आपने काटकर लाया और तरबूज के टुकड़े को देखकर गुरुदेव बोले, इसमें विष है, फेंक दो, तो आपने उसे फेंक देने में संकोच न किया।

हे गुरु आभा से आभासिक्त!

गुरुदेव की अति समीपवर्ती सेवा के सौभाग्य से आपका तन, मन, आत्मा आप्लावित, आभासिक्त, आपूरित है।

हे गुरु द्वारा गढ़े गुरु-भक्त!

आपको गुरुदेव ने अपने हाथों से गढ़ा है। आपको गढ़ने में गुरुदेव हर क्षण सिखाया-समझाया करते थे।
आपका भी कहना है कि गुरुदेव ने मुझ अघ-अकिंचन को सुनाते-पढ़वाते वक्ता बना दिये।

श्री श्रीसद्गुरु की शिक्षा कर धारण। करते जन त्रयताप संघारण ॥
स सद्गुरु को बेटा कहते मन भाता। ऐसा अनुपम सेवक नहीं देखा सुना जाता ॥
द दया प्रेम से हो परिपूर। करते अज्ञों की अज्ञानता दूर ॥
गु गुरु-भक्ति के तुम हो मिसाल। सीख इसे हो जग कल्याण ॥
रु रुज संसृति के तुम हो गये वैद्य। पाकर गुरुवर के भक्ति-भेद ॥
म महाराज सद्गुरु हैं राजन के राजा। जिनकी कृपा तुम किये निज काजा ॥
हा हाहाकार किये त्रयताप मनुजा। बचा लो हे मेँहीँ के सुत आजा ॥
रा राम-राज्य के संदेश सुनाते। सदाचार शिष्टाचार शुच्याचार को पढ़ाते ॥
ज जन्म-मरण बड़ा दुखदाई। इससे छूटन किये गुरु सेवकाई ॥
की कीर्ति करन गुरुवर का ऊँचा। गुरु ज्ञान देन करते तू कूचा ॥
ज जय-जय हो जग में गुरुवर को। तुम-सा गुरु-सुत मिले हम सबको ॥
य यह अर्जी है हम सब की तुमसे। बचा हमें संसृति के प्रलय अग्नि से ॥

अन्त में आपसे हमलोगों की प्रार्थना है कि हमारे अवगुणों को न देखते हुए हम दीनहीन, मतिहीन, लाचार पर कृपा बनाये रखेंगे।

दिनांक ११ एवं १२ जनवरी, २०२० ई०
स्थान–बैदा, प्रखंड-कदवा, जिला-कटिहार (बिहार)

हम हैं आपके कृपाकांक्षी
नाथू दास एवं हरेराम पंडित पिता श्रीबिलास पंडित
एवं समस्त क्षेत्रीय सत्संगीगण